ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 45, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 अगस्त, 2022 से रविवार 28 अगस्त, 2022
विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

**आजादी के अमृत महोत्सव पर सम्पूर्ण भारत में आर्यसमाजों, विद्यालयों, गुरुकुलों, सेवा संस्थानों द्वारा निकाली तिरंगा यात्राएं**

### दिल्ली में उत्तरी पश्चिम वेद प्रचार मंडल द्वारा रानी बाग क्षेत्र में 108 मीटर के राष्ट्रीय ध्वज के साथ निकाली गई

## भव्य विशाल तिरंगा यात्रा - जन-जन को दिया हर-घर तिरंगा लगाने का सन्देश

उ. पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्वावधान में दिनांक 13 अगस्त, 2022 को रानीबाग मार्केट में आजादी के 75 कार्यकर्ता और सदस्य बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए, गुरुकुल रानी बाग और सैनिक विहार के छात्र छात्राओं का उत्साह पूरे रानी बाग मार्केट तिरंगामय हो गया। इस अवसर पर 108 मीटर लंबा तिरंगा लेकर चल रहे बच्चों की छटा देखते ही रहे। बाईक रैली का नेतृत्व श्री मैथिली शर्मा ने किया। श्री वीरेन्द्र आर्य जी ने तिरंगा यात्रा के मार्ग की व्यवस्था सम्भली।









वर्ष - अमृत महोत्सव के अवसर पर वृहद तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस तिरंगा यात्रा में 75 बाइकों पर आर्य वीर दल के आर्य वीर तिरंगा लेकर आगे-आगे चल रहे थे। उत्तरी पश्चिमी दिल्ली की आर्य समाजों के अधिकारी, देखते ही बनता था। चांदनी चौक से सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ.हर्षवर्धन जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ और उत्तर पश्चिमी वेद प्रचार मंडल के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी सहित आर्य नेताओं ने इस तिरंगा यात्रा का नेतृत्व किया। बनती थी, पूरा कार्यक्रम उमंग उत्साह और उल्लास से भरपूर था, देशभक्ति के गीत और नारों से सारा वातावरण गुंजायमान हो उठा था। यात्रा में आर्य वीर दल, वीरांगना दल, निकटवर्ती आर्यसमाजों के कर्मठ कार्यकर्ता एवं अधिकारीगण सम्मिलित महर्षि दयानन्द चौक पर यह तिरंगा यात्रा समाप्त हुई जहां डॉ. हर्षवर्धन जी एवं अन्य महानुभावों लोगों को सम्बोधित किया। सभी ने राष्ट्रभक्ति और परोपकार का संकल्प लिया और एक दूसरे आजादी के अमृत महोत्सव की बधाई दी।

**सम्पादकीय**

**आजादी के अमृत महोत्सव पर मैकाले की शिक्षा नीति पर प्रहार**

## भारतीय शिक्षा बोर्ड कितना जरूरी था?

केन्द्र सरकार ने आजादी के 75 साल पूरे होने पर भारतीय शिक्षा बोर्ड का गठन करके उसके संचालन का जिम्मा स्वामी रामदेव के पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट को सौंपा है। जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, ऐसे में केंद्र सरकार ने भारतीय शिक्षा बोर्ड का गठन करके एक और ऐतिहासिक कार्य किया है। वर्ष 2015 में स्वामी रामदेव जी अपने हरिद्वार स्थित वैदिक शिक्षा अनुसंधान संस्थान के जरिए एक नया स्कूली शिक्षा बोर्ड शुरू करने का विचार प्रस्तुत किया था। इस स्कूली शिक्षा बोर्ड में 'महर्षि दयानंद की पुरातन शिक्षा' और आधुनिक शिक्षा का मिश्रण करके भारतीय शिक्षा बोर्ड की स्थापना की जानी थी। हालांकि शिक्षा मंत्रालय ने वर्ष 2016 में यह प्रस्ताव खारिज कर दिया था। किन्तु समय गुजरा और स्वामी जी का निरंतर प्रयास रंग लाया। नि:संदेह भारतीय शिक्षा बोर्ड भविष्य के भारत का निर्माण बिंदु साबित होगा।

हालाँकि हमारे यहाँ पहले से ही सीबीएसई, आईसीएसई, आईबी, स्टेट बोर्ड हैं। परन्तु फिर लंबे समय से 'वैदिक पाठशाला' और वैदिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारतीय शिक्षा बोर्ड से मांग की जा रही थी। स्वामी रामदेव जी ने भी इस उपलब्धि पर कहा है कि 1835 में मैकाले जो पाप करके गया था उसको साफ करने का ये बोर्ड काम करेगा।

सब जानते हैं कि मैकाले जब भारत आया तो उसने एक भारतीय गुरुकुल शिक्षा पद्धति देखी तो उसने सोचा कि अगर हम इस शिक्षा पद्धति को नष्ट कर दे तो लम्बे समय तक भारत पर शासन कर सकते हैं। मैकाले का मानना था कि शिक्षा व्यवस्था किसी भी देश और समाज की दिशा एवं दशा तय करती है। उस दौरान की बात अगर करें तो अठारवी सदी में जब ईस्ट इंडिया कंपनी वित्तीय रूप से संक्रमण काल से गुजर रही थी और ये संकट उसे दिवालियेपन की कगार पर पहुंचा सकता था।

*- शेष पृष्ठ 2 पर*

### सभा पहुंचे आर्य नेता डॉ. योगानन्द शास्त्री
## अभिनन्दन ग्रन्थ - चरैवेति-चरैवेति की प्रति दी भेंट



मंगलवार दिनांक 9 अगस्त 2022 की प्रात: दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ आर्य नेता डॉ. योगानन्द शास्त्री जी सभा कार्यालय पधारे। कार्यालय में पधारने पर महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उनका स्वागत एवं सम्मान किया गया। इस अवसर पर डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने उनके अभिनन्दन ग्रन्थ चरैवेति-चरैवेति की प्रति भेंट की।

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में पधारने पर
## मॉरिशस के हाईकमिश्नर श्री जगदीश जी का स्वागत



31 जुलाई, 2022 को सभा कार्यालय में पधारने पर मॉरिशस के हाई कमिश्नर श्री जगदीश जी का स्वागत एवं सम्मान किया गया। इस अवसर पर सभा की ओर से उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी द्वारा वैदिक साहित्य एवं पीतवस्त्र पहना कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य, सभा मन्त्री श्री कृपाल सिंह आर्य, आर्य अनाथालय के सचिव श्री नितिञ्जय चौधरी एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के व्यवस्था सचिव श्री सुरिन्द्र चौधरी जी भी उपस्थित रहे।

देववाणी-संस्कृत

# मानव शरीर रूपी यज्ञशाला

वेद-स्वाध्याय

**सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।**
**सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वपन्नजौसत्रसदौ च देवौ।।-यजुः. 34/5**
**ऋषिः** कण्वः।। **देवता** - अध्यात्मं प्राणाः।। **छन्दः** भुरिग्जगती।।

**शब्दार्थ - शरीरे सप्त ऋषयः प्रतिहिताः** = शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं **सप्त सदं अप्रमादं रक्षन्ति** = सार हैं जोकि इस सद (स्थन, यज्ञशाला) की प्रमाद-रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। **स्वपतः सप्त आपः लोकं ईयुः** = सुषुप्तावस्था में ये सात ज्ञानप्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं, **तत्र च** = तो वहां भी **सत्रसदौ** = यज्ञ में बैठे रहने वाले **अस्वप्नजौ** = कभी न सोनेवाले **देवौ** = दो देव **जागृतः** = जागते रहते हैं।

**विनय** - यह शरीर भगवान ने तुझे यज्ञ करने के लिए दिया है। यह देव पवित्र यज्ञशाला है। इसमें बैठे हुए सात ऋषि भगवान् का यजन कर रहे हैं। आंख देख रही है, कान सुन रहा है, नासिका सूंघ रही है, त्वचा स्पर्श कर रही हैं, जिह्वा रस ले रही है, मन मनन कर रहा है और बुद्धि निश्चय कर रही है। ये सातों ऋषि शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श, रस का ज्ञान करते हुए, मनन और अवधारण करते हुए अपनी इन ज्ञान-क्रियाओं द्वारा भगवान् का यजन कर रहे हैं। ये ज्ञानशक्तियां हमारे अन्दर भगवद्यजन के लिए ही रखी गई हैं हमारी प्रत्येक ज्ञान-प्राप्ति भगवत्प्राप्ति के लक्ष्य से ही होनी चाहिए और इन सातों ज्ञानेन्द्रियों (बाह्य और अन्दर के करणों) के साथ एक-एक प्राणशक्ति भी काम कर रही है, जिन्हें सात शीर्ष प्राण कहते हैं। ये सात प्राण इस 'सद्' की- इस यज्ञशाला की-रक्षा पूरी सावधानीता के साथ, बिना प्रमाद किये कर रहे हैं। इस प्रकार इस यज्ञशाला में निरन्तर यह यज्ञ चल रहा है। हम हमेशा कुछ-न कुछ ज्ञान (अनुभव) करते रहते हैं-देखते, सुनते या मनन आदि करते रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी यह देखना-सुनना बन्द नहीं होता। हां, सुषुप्ति-अवस्था में जब इन सात ऋषियों के 'आपः' (ज्ञानप्रवाह) सुषुप्ति के लोक मे लीन हो जाते हैं, हमें कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा होता, तब क्या यह यज्ञ भङ्ग हो जाता है? नहीं, तब भी दो देव जागते हैं। ये दोनों देव कभी भी सोने वाले नहीं, इन्हें कभी नींद दबा नहीं सकती, अतः ये 'सत्रसदौ' तब भी यज्ञ में बैठे हुए जागते रहते हैं। ये हैं-(1) आत्म-चैतन्य और (2) प्राण। इन सात ऋषियों को दर्शनशक्ति देनेवाला देव एक है और इन रक्षक प्राणों को प्राण-शक्ति देने वाले दूसरा है। ये दोनों देव-ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के देव-तब भी जागते रहते हैं और ज्ञान तथा कर्म द्वारा चलने वाले इस यज्ञ की इन दोनों शक्तियों को निरन्तर कायम रखते हैं, बल्कि पुष्ट करते रहते हैं, जब तक जीवन है तब तक चलता रहता है।

परन्तु क्या हम इस शरीर-यज्ञशाला को यज्ञशाला की भांति पवित्र रखते हैं? कहीं यज्ञ करने वाले ये सात ऋषि ज्ञानक्रिया द्वारा भगवद्यजन करना छोड़कर अपने ऋषित्व से भ्रष्ट तो नहीं हो जाते?

**-: साभार :- वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

## प्रथम पृष्ठ का शेष

कम्पनी का काम करने के लिए ब्रिटेन के स्नातक और कर्मचारी अब उसे महंगे पड़ने लगे थे। इसी कालखंड में गवर्नर जनरल विलियम बेंटिक भारत आया जिसने लागत घटाने के उद्देश्य से अब प्रसाशन में भारतीय लोगों के प्रवेश के लिए चार्टर एक्ट में एक प्रावधान जुड़वाया कि सरकारी नौकरी में धर्म, जाति या मूल का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा।

बस यहाँ से मैकाले का भारत में आने का रास्ता खुला। अब अंग्रेजों के सामने चुनौती थी कि वह कैसे भारतियों को उस भाषा में पारंगत करें जिससे कि ये अंग्रेजों के पढ़े-लिखे हिंदुस्तानी गुलाम की तरह कार्य कर सकें। इस कार्य को आगे बढाया जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन के अध्यक्ष थोमस बैबिंगटन मैकाले ने। मैकाले की सोच स्पष्ट थी। उसने पूरी तरह से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समाप्त करने और अंग्रेजी (जिसे हम मैकाले शिक्षा व्यवस्था भी कहते हैं) शिक्षा व्यवस्था को लागू करने का प्रारूप तैयार किया था।

मैकाले के शब्दों में "हमें एक हिन्दुस्तानियों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना है जो हम अंग्रेज शासकों एवं उन करोड़ों भारतीयों के बीच दुभाषिये का काम कर सके, जिन पर हम शासन करते हैं। हमें हिन्दुस्तानियों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना है, जिनका रंग और रक्त भले ही भारतीय हों लेकिन वह अपनी अभिरूचि, विचार, नैतिकता और बौद्धिकता में अंग्रेज हों, जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी और धर्मपिता मैकाले हो"।

इस पद्धति को मैकाले ने सुन्दर प्रबंधन के साथ लागू किया। इससे अंग्रेजी के गुलामों की संख्या बढ़ने लगी और जो लोग अंग्रेजी नहीं जानते थे वो अपने आपको हीन भावना से देखने लगे। क्योंकि उन्हें अपने भाइयों के सरकारी नौकरियों के ठाट दीखते थे, जिन्होंने अंग्रेजी की गुलामी स्वीकार कर ली थी। इस प्रक्रिया में हमारी भारतीय भाषाएँ कमजोर होती गयी और हिन्दुस्तान में हिंदी विरोध का स्वर उठने लगा। अंग्रेजी का मतलब सभ्य होना, उन्नत होना माना जाने लगा। नतीजा भारतीय भाषाओं का विकास रुक गया। संस्कृत एवं हिंदी समेत तमाम भारतीय भाषाओं को पीछे छोड़ते हुए अंग्रेजी भाषा आगे बढ़ने लगी। 'जोनी जोनी यस पापा' बच्चों को पढाया जाने लगा। फिर आया उपभोगतावाद का दौर और मिशनरी स्कूलों का दौर तथा अंग्रेजी भाषा का जादू चल पड़ा। कहने का अर्थ ये है मैकाले की शिक्षा पद्धति लागू होते ही स्कूली बच्चों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों, इतिहास और सभ्यता से अलग कर देने का काम शुरू हुआ। लड़कियों का लज्जा का आवरण तोड़ने के लिए स्कूलों में उन्हें स्कर्ट पहनाई जाने लगीं। साथ ही स्कूलों से वैदिक शिक्षा, उपनिषदों, गीता, रामायण और हिंदू धर्म ग्रंथों को दूर कर दिया गया।

परिणाम ये हुआ कि आज हिन्दू बच्चों को अपने सनातन धर्म का जो ज्ञान है वह टीवी सीरियल से है वरना उनकें स्कूलों में और उनके घरों में वेद-उपनिषद मौजूद नहीं हैं। अब टीवी सीरियल वाले अपने एजंडे के तहत हमारे महापुरुषों का चरित्र नष्ट करने लगे, जहाँ कृष्ण के साथ रुक्मिणी का नाम था, वहां राधा दिखाई गयी। शिव जैसे परम तपस्वी को भांग पीते हुए दिखाया जा रहा है। वेदों के नाम पर अफवाह फैलाई जाने लगी कि वेदों में गौमांस खाना लिखा है। धीरे-धीरे शिक्षा वामपंथ से प्रभावित होकर सनातन धर्म की विरोधी हो चली। हमारा इतिहास बिगाड़ा गया। भूगोल बिगाड़ा, खगोल बिगाड़ा गया। हमारे ऋषि, मुनियों-महर्षियों के द्वारा किये गये आविष्कार विदेशी लोगों के नाम पर जोड़ दिए गये। ताकि हमारे बच्चें अपने धर्म संस्कृति और सभ्यता को हीन भावना से देखने लगे।

आज भारतीय शिक्षा बोर्ड एक बड़ा कदम इसलिए माना जा रहा है क्योंकि लाखों-करोड़ों हिंदू चाहते हैं कि विज्ञान (फिजिक्स, केमेस्ट्री, बायोलॉजी) और गणित के साथ उनके बच्चे अपनी संस्कृति से जुड़ें और उन्हें पाठ्यक्रम में वैदिक शिक्षा मिले। निःसंदेह भारतीय शिक्षा बोर्ड का दूरगामी परिणाम यह होगा कि इससे आने वाली पीढ़ी वर्तमान की वामपंथ से प्रभावित शिक्षा प्रणाली से मुक्त हो जाएगी। अब तक धर्मनिरपेक्षता और आधुनिक शिक्षा के नाम पर स्कूली पाठ्यपुस्तकों में हिंदू-विरोधी एजेंडे को परोसा गया था। बीएसबी के स्थापित होने से फायदा मिलेगा कक्षा 12 तक अपना अलग शैक्षणिक मॉडल चलाने की मंजूरी मिल जाएगी। फिलहाल, सीबीएसई जैसे स्कूल बोर्ड इसकी अनुमति नहीं देते हैं। नये भारतीय शिक्षा बोर्ड से हमें आशा है कि भारत में हम वो युवा नेतृत्व गढ़ेंगे, जो भारत ही नहीं पूरे विश्व में नेतृत्व करेंगे। साथ ही यह देश का पहला राष्ट्रीय स्कूल बोर्ड माना जाएगा और उसे सिलेबस तैयार करने, स्कूलों को सम्बद्ध करने, परीक्षा आयोजित करने और प्रमाण पत्र जारी करके भारतीय पारंपरिक ज्ञान का मानकीकरण करने का अधिकार होगा। वह आधुनिक शिक्षा के साथ इसे मिश्रित करके भारतीय परंपरा के अनुसार पढ़ाई करवाएगा।- ***सम्पादक***

.....मैकाले की शिक्षा पद्धति लागू होते ही स्कूली बच्चों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों, इतिहास और सभ्यता से अलग कर देने का काम शुरू हुआ। लड़कियों का लज्जा का आवरण तोड़ने के लिए स्कूलों में उन्हें स्कर्ट पहनाई जाने लगीं। साथ ही स्कूलों से वैदिक शिक्षा, उपनिषदों, गीता, रामायण और हिंदू धर्म ग्रंथों को दूर कर दिया गया। परिणाम ये हुआ कि आज हिन्दू बच्चों को अपने सनातन धर्म का जो ज्ञान है वह टीवी सीरियल से है वरना उनकें स्कूलों में और उनके घरों में वेद-उपनिषद मौजूद नहीं हैं। अब टीवी सीरियल वाले अपने एजंडे के तहत हमारे महापुरुषों का चरित्र नष्ट करने लगे, जहाँ कृष्ण के साथ रुक्मणी का नाम था, वहां राधा दिखाई गयी। शिव जैसे परम तपस्वी को भांग पीते हुए दिखाया जा रहा है। वेदों के नाम पर अफवाह फैलाई जाने लगी कि वेदों में गौमांस खाना लिखा है। धीरे-धीरे शिक्षा वामपंथ से प्रभावित होकर सनातन धर्म की विरोधी हो चली।.....

## सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***9650183335***

# जातिवाद के विरुद्ध आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास

***जातिवाद को लेकर अकसर ऐसी अनेक घटनाएं सामने आती हैं, जिनमें किसी का अपमान, किसी का विरोध, किसी के ऊपर दबाव, प्रभाव आदि बनाए जाते हैं। किन्तु आर्य समाज का यह इतिहास रहा है कि हमारे महापुरुषों ने सदा से जातिवाद के दंश को झेलने वाले लोगों के उत्थान के लिए न केवल आंदोलन चलाए बल्कि उन्हें समाज में सम्मान दिलाने के लिए स्वयं अपमान, तिरस्कार सहन किए, इससे भी आगे हमारे पूर्वजों ने जातिवाद जैसी बुराई को समाप्त करने के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे दी। प्रस्तुत आलेख में भाई डॉ. विवेक आर्य जी ने आर्य समाज द्वारा जातिवाद की समाप्ति के इतिहास का सरल भाषा में सुंदर वर्णन किया है, पाठकों से अनुरोध है कि आइए, आर्य संदेश के इस अंक में प्रकाशित लेख को पढ़कर जानें जातिवाद के विरुद्ध आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास।***

***- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा***

**- डॉ. विवेक आर्य**

समाचार पत्र में पढ़ने को मिला कि अमुक स्थान पर दूल्हे को घोड़ी चढ़ने से मना कर दिया। कारण दूल्हा दलित समुदाय से सम्बन्धित होता है। गाँव के स्वर्ण लोगों को दलित समाज से सम्बंधित व्यक्ति द्वारा घोड़ी की सवारी करने पर आपत्ति है। इस प्रकार की घटनाएँ निन्दनीय हैं और हमारे समाज की एकता के लिए घातक हैं। यह हमारे संविधान के लिए भी एक चुनौती है और निश्चित रूप से उनके मानव अधिकारों का उल्लंघन है। सबसे खतरनाक बात यह है कि जो लोग सदियों से हिन्दू समाज को तोडने के लिए प्रयासरत हैं, वे इस प्रकार की घटनाओं का एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। उनका उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य वैमनस्व को बढ़ावा देकर अपना राजनैतिक उल्लू सीधा करना होता है। रूढ़िवादी सामन्ती विचार धारा के लोग यदि जन्म के आधार पर किसी व्यक्ति के साथ इस प्रकार का अमानुषिक आचरण करते हैं तो उनका हर स्तर पर विरोध होना चाहिए, पर उनका विरोध साध्य नहीं साधन है। साध्य है समाज के सभी वर्गों में सामंजस्य स्थापित करना और हर प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना।

समाज में कुछ नकारात्मक होता है तो सकारात्मक भी कम नहीं होता। उनका प्रचार करने से ही समाज में भेदभाव को समाप्त किया जा सकता है। आज जातिवाद उस प्रकार की समस्या नहीं है जैसी कि सौ-दो सौ साल पहले थी। आज जातिवाद की समस्या अधिकांश रूप से राजनैतिक है और इसी कारण से यह पहले की अपेक्षा अधिक भयावह है। जातिवाद को समाप्त करने के प्रयास करने वालों का प्रचार तंत्र इसको फैलाने वालों के प्रयासों और प्रचार तंत्र की अपेक्षा नगण्य है। आर्यसमाज ने अपने प्रारंभिक काल से ही सामाजिक जातिवाद को समाप्त करने के सार्थक प्रयास किये थे और इन जंजीरों को तोड़ने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की थी। गांधीजी ने तो केवल उनका नाम बदला था। इतिहास में ऐसी घटनाएँ स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं जिनको आज के युग में प्रचारित किया जाए तो निश्चित रूप से दोनों पक्षों के लिए प्रेरणा की संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं। हम बुरा के स्थान पर अच्छा वाले दृष्टान्तों को प्रचारित कर सामाजिक सन्देश देना चाहते हैं जिससे सकारात्मक माहौल बने।

### लाला सोमनाथ जी की माता का अमर बलिदान

लाला सोमनाथ जी आर्यसमाज रोपड़ (पंजाब) के प्रधान थे। आपके मार्गदर्शन में रोपड़ आर्यसमाज ने रहतियों की शुद्धि की थी। यों तो रहतियों का सम्बन्ध सिख समाज से था मगर उनके साथ अछूतों सा व्यवहार किया जाता था। उन्हें जनेऊ पहनाकर सम्मानित स्थान देने के कारण रोपड़ के पौराणिक समाज ने आर्यसमाजियों का बहिष्कार कर दिया एवं सभी कुओं से आर्यसमाजियों को पानी भरने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। नहर का गंदा पानी पीने से अनेक आर्यों को पेट के रोग हो गए जिनमें से एक सोमनाथ जी की माताजी भी थीं। उन्हें आन्त्रज्वर हो गया था। वैद्य जी के अनुसार ऐसा गन्दा पानी पीने से हुआ था। सोमनाथ जी के समक्ष अब एक रास्ता तो क्षमा मांगकर समझौता करने का और दूसरा रास्ता सब कुछ सहते हुए परिवार की बलि देने का। आपको चिन्ताग्रस्त देखकर आपकी माताजी ने आपको समझाया कि एक न एक दिन तो उनकी मृत्यु निश्चित है फिर उनके लिए अपने धर्म का परित्याग करना गलत होगा, इसलिए धर्म का पालन करने में ही भलाई है। सोमनाथ जी माता का आदेश पाकर चिन्ता से मुक्त हो गए एवं और अधिक उत्साह से कार्य करने लगे। माता जी रोग से स्वर्ग सिधार गई, तब भी विरोधियों के दिल नहीं पिघले। विरोध दिनों-दिन बढ़ता ही गया। इस विरोध के पीछे गोपीनाथ पंडित का हाथ था। वह पीछे से पौराणिक हिन्दुओं को भड़का रहा था। सनातन धर्म गजट में गोपीनाथ ने अक्टूबर 1900 के अंक में आर्यों के खिलाफ ऐसा भड़काया कि आर्यों के बच्चे तक प्यास से तड़पने लगे थे। सख्त से सख्त तकलीफें आर्यों को दी गईं। लाला सोमनाथ को अपना परिवार रोपड़ से जालंधर ले जाना पड़ा। जब शांति की कोई आशा न दिखी तो महाशय इंदरमन आर्य लाल सिंह (जिन्हें शुद्ध किया गया था) और लाला सोमनाथ स्वामी श्रद्धानन्द (तब मुंशीराम जी) से मिले और सनातन गजट के विरुद्ध फौजदारी मुकदमा करने के विषय में उनसे राय मांगी। मुंशीराम जी उस काल तक अदालत में धार्मिक मामलों को लेकर जाने के विरुद्ध थे। कोई और उपाय न देख अंत में मुकदमा दायर हुआ, जिस पर सनातन धर्म गजट ने 15 मार्च 1901 के अंक में आर्यसमाज के विरुद्ध लिखा 'हम रोपड़ी आर्यसमाज का इस छेडख़ानी के आगाज के लिए धन्यवाद अदा करते हैं कि उन्होंने हमें विधिवत् अदालत के द्वारा ऐलानिया जालंधर में निमंत्रण दिया हैं। जिसको मंजूर करना हमारा कर्तव्य है।' 3 सितम्बर 1901 को मुकदमा सोमनाथ बनाम सीताराम रोपड़ निवासी का फैसला भी आ गया। सीताराम को अदालत में माफीनामा पेश करना पड़ा।

इस प्रकार अनेक संकट सहते हुए आर्यों ने दलितोद्धार एवं शुद्धि के कार्य को किया था। मौखिक उपदेश देने में और जमीनी स्तर पर पुरुषार्थ करने में कितना अंतर होता है इसका यह यथार्थ उदाहरण है। सोमनाथ जी की माता जी का नाम इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। सबसे प्रेरणादायक तथ्य यह है कि किसी सवर्ण ने अछूतों के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये हों ऐसे उदाहरण केवल आर्यसमाज के इतिहास में ही मिलते हैं।

### नारायण स्वामी जी और दलितोद्धार

आर्यसमाज के महान नेता महात्मा नारायण स्वामी जी का जीवन हम सबके लिये प्रेरणास्रोत है। स्वामी जी की कथनी और करनी में कोई भेद नहीं था। उनके जीवन के अनेक प्रसंगों में से दलितोद्धार से सम्बम्धित दो प्रसंगों का पाठकों के लाभार्थ वर्णन करना चाहता हूँ। नारायण स्वामी जी तब मुरादाबाद आर्यसमाज के प्रमुख कर्णधार थे। आर्यसमाज में अनेक ईसाई एवं मुसलमान भाइयों की शुद्धि उनके प्रयासों से हुई थी जिसके कारण मुरादाबाद का आर्यसमाज प्रसिद्ध हो गया। मंसूरी से डॉ. हुकुम सिंह एक ईसाई व्यक्ति की शुद्धि के लिए उसे मुरादाबाद लाये।

उनका पूर्व नाम श्री राम था, वे पहले सारस्वत ब्राह्मण थे। इसाईयों द्वारा बहला-फुसला कर किसी प्रकार से ईसाई बना लिए गए थे। आपकी शुद्धि करना हिन्दू समाज से पंगा लेने के समान था। मामला नारायण स्वामी जी के समक्ष प्रस्तुत हुआ। आपने अन्तरंग में निर्णय लिया कि नाममात्र की शुद्धि का कोई लाभ नहीं है। शुद्धि करके उसके हाथ से पानी पीने का नम्र प्रस्ताव रखा गया जो स्वीकृत हो गया। यह खबर पूरे मुरादाबाद में आग के समान फैल गई। शुद्धि वाले दिन अनेक लोग देखने के लिए जमा हो गए। शुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ एवं शुद्ध हुए व्यक्ति के हाथों से आर्यों द्वारा जल ग्रहण किया गया। अब घोर विरोध के दिन आरम्भ हो गए। 'निकालो इन आर्यों को जात से' 'कोई कहार इनको पानी न दे' 'कोई मेहतर इनके घर की सफाई न करे', 'कोई इन्हें कुँए से पानी न भरने दे' ऐसे ऐसे अपशब्दों से आर्यों का सम्मान किया जाने लगा। बात कलेक्टर महोदय तक पहुँच गई।

उन्होंने मुंशी जी को बुलाकर उनसे परामर्श किया। मुंशी जी ने सब सत्य बयान कर दिया तो कलेक्टर महोदय ने कहा कि आर्य लोग इसकी शिकायत क्यों नहीं करते। मुंशी जी ने उत्तर दिया। 'हम लोग स्वामी दयानंद के अनुयायी हैं। एक बार ऋषि को किसी ने विष दिया था। कोतवाल उसे पकड़ लाया। ऋषि ने कहा- इसे छोड़ दीजिये। मैं लोगों को कैद कराने नहीं अपितु कैद से मुक्त कराने आया हूँ। ये लोग मूर्खतावश आर्यों का विरोध करते हैं। इन्हें ज्ञान हो जायेगा तो स्वयं छोड़ देंगे।' अंत में कोलाहल शांत हो गया और आर्य अपने मिशन में सफल रहे।

### कुआँ नापाक हो गया

एक अन्य प्रेरणादायक घटना नारायण स्वामी जी के वृन्दावन गुरुकुल प्रवास से सम्बन्धित है। गुरुकुल की भूमि में गुरुकुल के स्वत्व में एक कुआँ था। उस काल में ऐसी प्रथा थी कि कुओं से मुसलमान भिश्ती तो पानी भर सकते थे मगर चर्मकारों को पानी भरने की मनाही थी। मुसलमान भिश्ती चाहे तो पानी चर्मकारों को दे सकते थे। कुल मिलाकर चर्मकारों को पानी मुसलमान भिश्तियों की कृपा से मिलता था। जब नारायण स्वामी जी ने यह अत्याचार देखा तो उन्होंने चर्मकारों को स्वयं पानी भरने के लिए प्रेरित किया। चर्मकारों ने स्वयं से पानी भरना आरम्भ किया तो कोलाहल मच गया।

मुसलमान आकर स्वामी जी से बोले कि कुआँ नापाक हो गया है क्योंकि जिस प्रकार बहुत से हिन्दू हमको कुँए से पानी नहीं भरने देते उसी प्रकार हम भी इन अछूतों को कुँए पर चढ़ने नहीं देंगे। स्वामी जी ने शांति से उत्तर दिया 'कुआँ हमारा है। हम किसी से घृणा नहीं करते। हमारे लिए तुम सब एक हो। हम किसी मुसलमान को अपने कुँए से नहीं रोकते। तुम हमारे सभी कुओं से पानी भर सकते हो। जैसे हम तुमसे घृणा नहीं करते। हम चाहते हैं कि तुम भी चर्मकारों से घृणा न करो।' इस प्रकार एक अमानवीय प्रथा का अंत हो गया।

### मनुष्यता से बड़ा को धर्म नहीं

अपनी खेती की देखभाल करके घर लौट रहे हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को रास्ते में सहसा किसी के चिल्लाने की ध्वनि सुनाई दी। शीघ्र जाकर देखा कि एक स्त्री को साँप ने काट लिया है। त्वरित् बुद्धि आचार्य को लगा कि यहाँ ऐसा कोई साधन नहीं है जिससे सर्प-विष को फैलने से रोका जाये।

***- शेष पृष्ठ 6 पर***

## दिल्ली के अनछुए क्षेत्रों में पहुंचने के लिए आर्यसमाज कृतसंकल्पित : सहयोग एवं घर-घर यज्ञ प्रकल्प के अन्तर्गत

# गरीब सेवा बस्तियों में निरन्तर हो रहे हैं - यज्ञ, एवं वस्त्र वितरण के कार्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलौनों का वितरण किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 7 जुलाई से 17 जुलाई, 2022 तक पानी की टंकी, आनंद पर्बत, के - ब्लॉक जहांगीर पुरी, यमुना घाट क्षेत्र की कलस्टर एवं झुग्गी झोपड़ी सेवा बस्तियों में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। यज्ञ के दौरान आचार्य जी ने कहा कि अर्थ का अभिप्राय कमाई से है, धन से है। यह अभिप्राय सार्थक तब हो जाता है ज़ब इसमें परम जुड़ जाए और ये परमार्थ बन जाता है। दूसरों के लिये कमाया धन, परोपकार हेतु किया गया सत्कर्म परमार्थ कहलाता है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित आर्य समाज की सेवा इकाई सहयोग आप सभी के सहयोग से इस परिभाषा को यथार्थ रूप देने के कार्य में निरंतर अग्रसर है।

**आपका योगदान** - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंदों तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी।

- ***प्रबन्धक***

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में नील फाउंडेशन एवं नॉर्थ अमेरिका आर्यसमाज के सहयोग से

### गरीब झुग्गी-झोपड़ियों, सेवा बस्तियों एवं संस्थाओं में निरन्तर पहुंचकर की जा रही है

# स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभियान के अन्तर्गत नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नील फाउंडेशन एवं नॉर्थ अमेरिका आर्यसमाज के सहयोग से दिल्ली की समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे-छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, वहां गरीब, दिहाड़ी मजदूर लोगों के कल्याण के लिए स्वास्थ्य जगरुकता सेवा अभियान संचालित किया रहा है। इस अभियान के अन्तर्गत शुगर, ब्लड प्रेशर, हीमोग्लोबिन, आक्सीजन, पल्स, वजन, लम्बाई की नि:शुल्क जांच की जाती है। गत दिनों में इस अभियान के अन्तर्गत- दिनांक 13 जुलाई को जहांगीरपुरी आर्यसमाज के सामने पार्क में, 14 जुलाई को आर्य हंसराज मॉडल स्कूल, भलस्वा रोड के. ब्लाक में, दिनांक 15 जुलाई को जहांगीर पुरी में के. ब्लाक सर्वोदय स्कूल के पीछे, 18 को मंगोलपुरी क्षेत्र, 19 को मल्कागंज क्षेत्र, 20 को मॉडल टाउन हनुमान मन्दिर के पास, 26 जुलाई को खिलौना बाग कल्स्टर कालोनी, 27 को रामा विहार क्षेत्र की कल्स्टर कोलोनियों में, 29 जुलाई को ओखला की झुग्गियों में, 30 को ईस्ट आफ कैलाश, 31 को आर्यसमाज गोविन्दपुरी के निकट झुग्गियों में स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किए गए। अगस्त मास, 2022 में बदरपुर बोर्डर क्षेत्र, सौरव विहार, जैतपुर क्षेत्र में एम्बूलेंस के साथ शिविर लगाकर स्वास्थ्य जांच की गई। प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिदिन प्रात: एवं सायं दो-दो बार शिविर लगाए गए, जहां सैंकड़ो लोगों ने स्वास्थ्य जांच सेवा का लाभ उठाया।

ज्ञातव्य है कि सभा द्वारा आरम्भ की गई इस विशेष प्रकल्प में एक व्यक्ति की जाच पर लगभग 100/- रुपये का व्यय होता है। जोकि विभिन्न दानी महानुभावों के दिए गए सहयोग से सम्भव हो पा रहा है। अभी सभा प्रतिदिन केवल 100 व्यक्तियों - (50 प्रात: शिविर में तथा 50 सांयकालीन शिविर में) की स्वास्थ्य जांच करती है। इस कार्य में आपका आर्थिक सहयोग विशेष रूप से अपेक्षित है।

**आपका योगदान** - अत: समस्त दानी महानुभावों एवं पाठकों से अनुरोध है कि इस सेवा को निरन्तर संचालित करने और निरन्तर विस्तार करने के लिए अपनी ओर से, परिवार की ओर से, संस्थान/संगठन की ओर से अधिक से अधिक सहयोग करने की कृपा करें। कृपया अपना सहयोग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम निम्नांकित बैंक में सीधे जमा कर सकते हैं। सभा को दिया गया समस्त दान आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। कृपया अपनी दानराशि जमा कराने के बाद डिपोजिट स्लिप अपने नाम, पते, मो.नं. एवं पैन नं. के साथ 9540040388 पर व्हाट्स एप्प कर दें, जिससे आपको आपकी दानराशि की रसीद भेजी जा सके।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
(The Delhi Arya Pratinidhi Sabha)
A/c No. 33723192049
IFSC Code : SBIN0001639
State Bank Of India, Janpath

### आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से आजादी के 75वें वर्ष अमृत महोत्सव पर

# 'एक शाम बलिदानियों के नाम' कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा 14 अगस्त 2022 को एक शाम बलिदानियों के नाम के कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज हनुमान रोड पर शाम 5 से 8 बजे तक सम्पन्न हुआ। आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के अवसर पर दल के युवाओं में ऊर्जा, व उत्साह बढ़ाने वाले इस कार्यक्रम में सैकड़ों आर्य वीर, वीरांगनायें और आर्य समाज के अधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य भद्रकाम वर्णी जी एवं आचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री जी थे। कार्यक्रम का उद्घाटन परोपकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान एवं एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल,पंजाबी बाग, दिल्ली के संरक्षक माननीय श्री सत्यानन्द आर्य जी द्वारा भारत देश की आन-बान-शान तिरंगे का ध्वजारोहण कर किया गया। श्री आर्य जी ने आपने अपने उद्बोधन में आर्य वीरों को प्रेरणा देते हुए कहा कि सभी राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनें और वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रचार प्रसार में बढ़-चढ़ कर भाग लेवें।कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्री विनय आर्य जी, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा थे। आपने आर्य समाज व क्रांतिकारियों के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए सभी को जागरूक किया। साथ ही यह भी बताया की जो भी क्रांतिकारी देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहा था, वह या तो आर्य समाजी था या कहीं न कहीं आर्य समाज की पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ था। कार्यक्रम की अध्यक्षता दल के संचालक श्री जगवीर आर्य जी द्वारा की गई। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में श्री शिव कुमार मदान, उप-प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री अशोक गुप्ता, प्रधान, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, श्री रवि देव गुप्ता (प्रधान,दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल), राष्ट्रीय कवि श्री बृजपाल संत, श्री हरिओम बंसल (प्रधान, आर्य समाज झिलमिल कॉलोनी), श्री वेद प्रकाश आर्य (का. प्रधान, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल), बृजेश आर्य (पूर्व संचालक, आर्य वीर दल दिल्ली), सतीश आर्य (सार्वदेशिक आर्य वीर दल), श्री धर्मवीर आर्य (मंत्री, आर्य समाज मोहन गार्डन), डॉ. राम भरोसे आदि बहुत से अतिथि उपस्थित थे। जिनका दल की और से सैनिक सम्मान के द्वारा दल के अधिकारीयों, शिक्षको एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओ के माध्यम से स्वागत किया गया। आर्य युवा भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय जी ने देशभक्ति के गीत एवं भजन सुनाए, जिन्हें सुनकर आर्यजन भाव विभोर हो गए। राष्ट्रीय कवि बृजपाल संत जी द्वारा शहीद भगत सिंह जी के ऊपर ओजस्वी कविता प्रस्तुत की। दल के उप शिक्षक गौरव आर्य (मंगोलपुरी), शगुन व तन्नु आर्य (जहाँगीर पुरी) ने द्वारा भी देशभक्ति के ओजस्वी गीत एवं कविताएं प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मल्कागंज के 11 वर्षीय रमित आर्य का छोटी सी आयु में सक्रिय नियमित शाखा लगाने हेतु सम्मान किया गया। रामा विहार के ललित आर्य जी के जन्मदिन पर सभी ने बधाई दी साथ ही ललित ने शाखा लगाने के अपने अनुभव को भी सभी के साथ साँझा किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान शिक्षक धर्मवीर आर्य, उप-प्रधान शिक्षक लक्ष्य आर्य, एवं दिनेश आर्य, मोहित आर्य, आशीष आर्य, करन आर्य, सोनू आर्य, सुशील आर्य, बोबी आर्य, विशाल आर्य, गौरव आर्य, प्रियांश आर्य, राजवीर शास्त्री, दल के मंत्री पवन आर्य, वाचस्पति शास्त्री आदि दल के सभी अधिकारीयों का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन दल के महामंत्री बृहस्पति आर्य द्वारा किया गया, साथ ही आए हुए सभी आर्यजनों का धन्यवाद कर दल के सह संचालक सुन्दर आर्य, उप संचालक विरेश आर्य व वरिष्ट कार्यकर्ता प्रतुल आर्य जी द्वारा शांति पाठ कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

### अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द विद्या निकेतन बामनिया में

# धूमधाम से मनाया श्रीकृष्ण जन्मोत्सव : विद्यार्थियों ने किया श्री कृष्ण के योगेश्वर रूप का वर्णन

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानंद आर्य विद्या निकेतन, बामनिया, जिला झाबुआ में 18 अगस्त, 2022 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूमधाम से आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने श्री कृष्ण के जीवन पर आधारित लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की। जिनमें श्री कृष्ण के योगेश्वर रूप एवं उनकी लीलाओं के पीछे के वास्तविक कारणों को प्रस्तुत किया और अनेक भ्रांतियो को दूर किया। इस अवसर पर नर्सरी से कक्षा 5 तक ने कक्षा/हाउस वार पिरामिड बनाकर मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नन्हे मुन्नों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता में स्वामी श्रद्धानंद हाउस के छात्रों ने मटकी फोड़ कर बाजी मारी। छात्राओं के लिए आंखों पर पट्टी बांधकर मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। – ***प्रवीण अत्रे, प्रधानाचार्य***

### गुरुकुल पौंधा में 47 ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार

# वैदिक भारत-श्रेष्ठ भारत बनाने की दिशा में एक आशा की किरण

## गुरुकुलीय आर्ष विद्या जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन - स्वामी चित्तेश्वरानन्द

देहरादून स्थित श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौंधा, 47 ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन के आरम्भ में कहा कि ब्रह्मचारियों का सौभाग्य है कि उन्हें इस पवित्र गुरुकुल में पढ़ने का अवसर मिल रहा है। आर्ष विद्या जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन है। यह विद्या हमारे इन गुरुकुलों में मिलती है। ब्रह्मचारियों को गुरुकुल में अध्ययन करते हुए इस विद्या को पढ़कर इससे लाभ उठाना है और विद्वान बनना है। मनुष्य की विशेषता उसका धर्म से युक्त होना होता है। – ***शेष पृष्ठ 8 पर***

Chapter - 17

# Arya Samaj and the Aryas : Gayatri Mantra

Part- 1

**Gayatri Mantra**
**(Guru Mantra)**

The four Hedas contain more than 20,000 mantras including one very popular mantra which is known as the Gayatri mantra. Gayatri is actually the name of a Sanskrit form of poetry, which is used in the writing of this mantra : the other mantras are also written in the same form though it is one particular mantra which is known as the Gayatri mantra. When a child starts his education under his guru, the Gayatri mantra is the first mantra taught to him. This mantra is thereafter recited by the child almost every day and at every occasion. As this is the first lesson given by the guru, it is also called the guru Mantra.

The prayer contained in Gayatri mantra is about complete devotion to God in which the worshipper beseeches God to bless him with a noble mind, which is the centre of happiness and contentment in human life.

As every person on the earth has full right to derive benefits of the sun, ait, water, etc., similarly every person has equal right over the Vedas and on reciting the Gayatri mantra. Arya Samaj does not subscribe to the belief of awarding limited rights to any caste or community or on certain days and time or to a certain gender for reading the Vedas or any particular mentre and neither can anyone be deprived of reading, reciting or hearing the Gayatri mantra.

Further, just by reciting a mantra, be it the Gayatri mantra, no one is bestowed with any auspicious or inauspicious results; a mantra is effective only when one understands its meaning and tries to absorb the meaning in his heart and his actions in life. Gaumata (Cow) God provides a newborn child his food through the breasts of his mother. After a certain age, when the breast - feeding mother unable to feed her child, the child is provided his food in the form of milk obtained from a cow or a goat or a buffalo, etc. These animals are gentle by nature due to their lactating state and a child continues to enjoy the milk of these animals throughout his life.

The cow has a special place in our heart for the simple reason that the milk of the cow is the most suitable and beneficial food item for human beings Apart from milk, the cow's urine and dung are also useful as these can be converted into medicines to cure humans. The cow's milk provides ghee (clarified butter), which has to be used in performing a yagya for its highest quality to be offered to agni (fire). Arya Samajis treats the cow like a mother as once the mother's milk stops, the cow becomes a mother for us.

Killing a cow for meat or beef is the most heinous act of ingratitude. Swami Dayanand's book titled Gokarunanidhi is an eye - opener for all those who do not understand the importance of cow. Arya Samaj is committed to oppose cow slaughter at all the forums.

***-: With thanks :-***
***"The Beliefs of Arya Samaj"***
**by Shri Mahendra Arya**

पृष्ठ 3 का शेष

## जातिवाद के विरुद्ध आर्य समाज ....

उन्होंने फौरन यज्ञोपवीत (जनेऊ) तोड़कर सर्प-दंश के ऊपरी हिस्से में मजबूती से बांध दिया। फिर सर्प-दंश को चाकू से चीरकर विषाक्त रक्त को बलात् बाहर निकाल दिया। उस स्त्री की प्राण-रक्षा हो गयी।

इस बीच गाँव के बहुत से लोग इकट्ठे हो गये। वह स्त्री अछूत थी। गाँव के पण्डितों ने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा 'जनेऊ जैसी पवित्र वस्तु का इस्तेमाल इस औरत के लिये करके आपने धर्म की लुटिया डुबो दी। हाय! गजब कर दिया।' विवेकी आचार्य ने कहा 'अब तक नहीं मालूम तो अब से जान लीजिये, मनुष्य और मनुष्यता से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। मैंने अपनी ओर से सबसे बड़े धर्म का पालन किया है।'

**रिश्तों से बड़ा दलितोद्धार**

प्रोफेसर शेर सिंह पूर्व केंद्रीय मंत्री भारत सरकार के पिता अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध जमींदार थे। दलितों से छुआछूत का भेदभाव मिटाने के लिए उन्होंने अपने खेतों में बने कुएँ दलितों के लिए पानी भरने हेतु स्वीकृत कर दिए। प्रोफेसर शेर सिंह उस समय विद्यालय में पढ़ते थे। उस काल की प्रथा के अनुसार उनका विवाह निश्चित हो चुका था। जब कन्या पक्ष ने शेर सिंह जी के पिता के निर्णय को सुना तो उन्होंने सन्देश भेजा कि या तो दलितों के लिए कुँए से पानी भरने पर पाबन्दी लगा दें अन्यथा इस रिश्ते को समाप्त समझें। शेर सिंह जी के पिता ने रिश्तों को सामाजिक समरसता के सामने तुच्छ समझा और रिश्ता तोड़ना मंजूर किया, पर दलितों के साथ न्याय किया।

जब आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता और विद्वान् पंडित बुद्धदेव जी वेदालंकार को यह जानकारी मिली तो वे शेर सिंह जी के पिता से मिलने गए एवं उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी निगाह में एक आर्य कन्या है जिनसे शेर सिंह जी का विवाह होगा। कालांतर में उन्होंने अपनी कन्या का विवाह जाति-बंधन तोड़कर शेरसिंह जी के साथ किया।

इस प्रकार के अनेक प्रसंग महाशय रामचन्द्र जी (जम्मू), वीर मेघराज जी, लाला लाजपत राय, लाला गंगाराम जी (स्यालकोट), पंडित देवप्रकाश जी (मध्य प्रदेश), मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी (बरोदा), वीर सावरकर जी रत्नागिरी, स्वामी श्रद्धानन्द जी (दिल्ली), पंडित रामचन्द्र देहलवी (दिल्ली) आदि के जीवन में मिलते हैं जिनके प्रचार-प्रसार से जातिवाद उन्मूलन की प्रेरणा मिलती हैं। यही इस सिक्के के दो पहलू हैं कि दलितोद्धार के लिए दलितों पर अत्याचार के स्थान पर भेदभाव मिटाने वाली घटनाओं को प्रचारित किया जाना चाहिए।


वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें


प्रेरक प्रसंग

## क्या उन्हें दुर्गन्ध नहीं आती थी?

रोहतक में एक मुहल्ले में दलितवर्ग के भाई रहते हैं। वहाँ एक चमड़ेवाला कारखाना है। चमड़े के कारखाने के कारण वहाँ बहुत दुर्गन्ध आती है। किसी के लिए वहाँ कुछ समय के लिए रुकना बड़ा कष्ट प्रद ही होता है। दुर्गन्ध सबका जीना दूभर कर देती है।

इसी चमड़ेवाले कारखाने के क्षेत्र में दलितों के बच्चों की शिक्षा के लिए श्री परमानन्दजी विद्यार्थी ने एक पाठशाला खोल दी। उन्हें दिन-रात दलितोद्धार का ध्यान रहता था। दीन बालक-बालिकाओं को शिक्षित बनाकर उन्हें जो आनन्द मिलता था, उसका वर्णन न वाणी कर सकती है और न ही लेखनी उनके उस आनन्द का शब्द-चित्र खींच सकती है।

एक बार स्वामी अग्निदेवजी भीष्म जी को विद्यार्थीजी वह पाठशाला दिखाने ले-गये। भीष्मजी ने इन पंक्तियों के लेखक को बताया कि उनके लिए तो वहाँ खड़ा होना ही कठिन था। न जाने विद्यार्थीजी कैसे तपस्वी हैं, जो घण्टों उस दुर्गन्ध में बिताते हैं। कई वर्ष तक विद्यार्थीजी वहाँ यह सेवा-यज्ञ चलाते रहे। उनकी सेवा-साधना से आज उनके उन दलित शिष्यों में से कई बड़े-बड़े उच्च अधिकारी हैं और उन पर आर्यसमाज की छाप है। वे विद्यार्थीजी का यशोगान करते नहीं थकते। ऋषि की पवित्र शिक्षा से दुर्गन्धियुक्त वातावरण को सुगन्धित करके उन्होंने नरक को स्वर्ग बना डाला। वे आर्यसमाज की नींव का एक पत्थर थे।

*- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

***साभार :***
***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***


***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*** : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।


आर्योद्देशयरत्नमाला पद्यानुवाद

## तीर्थ-स्तुति-फल

**२० - तीर्थ**
विद्याभ्यास विचार शुभ,
ईशोपासन, धर्म।
ब्रह्मचर्य व्रत सत्य,
जय-इन्द्रिय, उत्तम कर्म ।।26।।
दुख सागर से जीव को
ये देते हैं तार।
इसीलिए ये 'तीर्थ' हैं,
यह है सत्य विचार।।27।।

**२१ - स्तुति**
प्रभु या किसी पदार्थ के
करके गुण का ज्ञान।
कथन-श्रवण ही सत्य है,
'स्तुति' की पहिचान।।28।।

**२२ - स्तुति का फल**
जो कि गुणों को जानकर
हो पदार्थ में प्रीति।
'स्तुति-फल' कहते उसे
सुजनों की यह रीति।।29।।

**साभार :**
**सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से**


## आर्य सन्देश

**क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?**
**क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?**
**क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?**
**क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?**
**क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?**

**यदि हां! तो**

**आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें**
**https://t.me/aryasandesh110001**

**- सम्पादक**



## वैदिक शगुन लिफाफे

**महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में**

| सिक्के वाले | बिना सिक्के |
|---|---|
| मात्र 500/-रु. सैंकड़ा | मात्र 300/-रु. सैंकड़ा |

**प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली**
**दूरभाष : 011-23360150, 09540040339**

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित समिति के अथक प्रयासों से विश्व विख्यात आर्य समाज दीवान हाल चांदनी चौक में

# आजादी के अमृत महोत्सव पर स्वाधीनता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व सहर्ष सम्पन्न

## वर्षों बाद पुनः दूरदर्शन से दिखाया गया आर्यसमाज दीवान हॉल विशाल भवन

भारत की राजधानी दिल्ली की समस्त आर्य समाजो में आर्य समाज दीवान हाल चांदनी चौक का अपना विशेष स्थान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सतत प्रयासों से आर्यसमाज दीवान हॉल में भारत की आजादी का अमृत महोत्सव और श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व पूरे हर्षोल्लास से मनाया गया।

स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ, आजादी के अमृत महोत्सव पर आर्य समाज दीवान हाल के ऐतिहासिक विशाल भवन पर 75 तिरंगे ध्वज फहराए गए, राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज की यह बानगी देखते ही बनती थी, राष्ट्र भक्ति के इस विहंगम दृश्य को इलैक्ट्रोनिक मीडिया में भी पूरा सम्मान प्रदान किया गया। 15 अगस्त को भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री जब लालकिले पर तिरंगा फहरा रहे थे तब सामने आर्य समाज की ऊंची गुम्मद और दीवारों पर ओम ध्वज के साथ तिरंगे की कतार स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

आर्य समाज दीवान हाल द्वारा राष्ट्रीय पर्व मनाने की यह मनोहारी छटा इतिहास में अंकित हो गई। बहुत वर्षों के बाद पुनः दूरदर्शन पर आर्यसमाज दीवान हॉल के भवन को अन्य धार्मिक स्थलों के साथ दिखाना समरसता का प्रतीक बन गया।

वैदिक पर्व परंपरा का पालन करते हुए 19 अगस्त 2022 को योगीराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सभा के संवर्धकों के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ किया गया, जिसमें आर्य महानुभावों ने आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की। योगीराज श्री कृष्ण के आदर्शों पर आधारित सत्संग में उनके उज्जवल चरित्र को अपनाने का संकल्प लिया गया।

वर्तमान में आर्य समाज दीवान हाल के अंतर्गत संचालित आर्य समाज मोर सराय में आर्य वीर दल की विशेष शाखा प्रतिदिन लगाई जाती है, जिसमें युवक युवतियों के जीवन निर्माण का कार्य सफलतापूर्वक हो रहा है। दैनिक और साप्ताहिक यज्ञ और सत्संग विधिवत किया जा रहा है। इन समस्त आर्य गतिविधियों में क्षेत्रीय महानुभाव सहभागी बन कर गौरवान्वित हो रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि आर्यसमाज दीवान हॉल में बहुत लंबे समय से दैनिक गतिविधियों तथा आर्य और राष्ट्रीय पर्वों के मनाने पर विराम-सा लगा हुआ था। यह समाज लगभग 100 वर्ष पुरानी और विश्व विश्वविख्यात आर्यसमाज है। भारत के ऐतिहासिक स्थल लाल किले के सामने, चांदनी चौक जैसे विश्व प्रसिद्ध बाजार में इस आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास अद्भुत प्रेरणाप्रद है। यहां से लगातार आर्य समाज के प्रचार प्रसार और विस्तार को लम्बे समय तक गति प्राप्त होती रही। यहां पर आर्य समाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने पुरोहित तथा उपदेशक के पदों पर रहते हुए अपनी अनुपम सेवाएं प्रदान की हैं। इस ऐतिहासिक आर्य समाज के प्रांगण में सार्वदेशिक सभा के अंतर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रमुख कार्यालय भी संचालित होते थे। पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन और अंतर्राज्यीय बस अड्डा नजदीक होने के कारण भारत के कोने कोने से दिल्ली आने वाले आर्य समाज के नेता, कार्यकर्ता, सदस्यगण भी आर्य समाज दीवान हाल में ही निवास करते थे। इस तरह इस समाज में दिन-रात रौनक रहा करती थी और यहां से पूरे भारत में आर्य समाज के वैदिक विचारों का आदान प्रदान सम्भव होता था।


**आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों हेतु**

**उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृति योजना**

**आर्यसमाज के विद्यालयों, गुरुकुलों, आदिवासी/वनवासी क्षेत्रों में संचालित आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त गरीब/आर्थिक स्प से कमजोर तथा आर्य कार्यकर्ताओं के प्रतिभावान बच्चे जो कक्षा 12वीं के उपरान्त मैडिकल, इंजीनियरिंग, विधि जैसे उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेना चाहते हैं अथवा पढ़ रहे हैं**

**वर्ष 2022-23 की छात्रवृति के लिए आवेदन करें**

।।ओ३म्।।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

आमंत्रित आवेदन

**भूषण एवं विजय वर्मा**

**छात्रवृत्ति योजना**

भारत में12वीं पास छात्र जो उच्चशिक्षा जैसे कि चिकित्सा, इंजीनियरिंग और अन्य उच्च पाठ्यक्रमों के लिए आर्थिक अभावग्रस्त सुयोग्य छात्रों का सहयोग करने हेतु एक पहल

Apply Now

www.pratibhavikas.org/scholarship

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

9311721172 E-Mail : dss.pratibha@gmail.com



**ओ३म्**

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

**सत्यार्थ प्रकाश**

सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com



**हवन सामग्री**

**मात्र 90/- किलो**

10, 20 किलो की पैकिंग

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339


**शोक समाचार**

## श्री राजू आर्य को मातृशोक

आर्य वीर दल दिल्ली के उप संचालक एवं दिल्ली सभा के प्रकल्प हवन उत्थान जनकल्याण समिति के संयोजक श्री राजू आर्य जी की पूज्यमाता श्रीमती दिल कुमारी जी का 13 अगस्त, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 18 अगस्त को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य सहित अन्य अनेक महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## श्री आनन्द स्वरूप मलिक जी का निधन

आर्य स्त्री समाज बी-ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली की प्रधाना श्रीमती विमला मलिक जी के पतिदेव श्री आनन्द स्वरूप मलिक जी का दिनांक 19 अगस्त को 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 22 अगस्त को आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित अन्य अनेक महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## श्री अर्जुनदेव स्नातक जी का निधन

आर्य पुरोहित सभा आगरा के पूर्व प्रधान एवं अनेक पुस्तकों के लेखक, आर्य वीर दल आगरा के बौद्धिकाध्यक्ष आचार्य श्री अर्जुनदेव स्नातक जी का 22 अगस्त को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 अगस्त को वैदिक सत्संग मंडल, दरगाह कालोनी आगरा में सम्पन्न हुई।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक**

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 अगस्त, 2022 से रविवार 28 अगस्त, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 24-25-26/8/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 अगस्त, 2022


## आजादी के 75वें वर्ष अमृतमहोत्सव के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय ने निकाली तिरंगा यात्रा

### राष्ट्र सेवा में सर्वस्व न्योछावर करना गुरुकुल की शिक्षा एवं परम्परा - डॉ. रूपकिशोर शास्त्री, कुलपति

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय में 12 अगस्त, 2022 को तिरंगा यात्रा रैली का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रूप किशोर शास्त्री ने दयानंद द्वार पर स्थित टैंक से तिरंगा यात्रा रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस मौके पर कुलपति प्रो. रूप किशोर शास्त्री ने कहा कि आजादी की लड़ाई में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की भूमिका आजादी की अलख जगाने वाली रही है। पराधीनता के समय में गुरुकुल की यह पुण्य भूमि क्रांतिकारी गतिविधियों का बड़ा केंद्र रही। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द महान देशभक्त एवं स्वतंत्रता सेनानी थे। तिरंगा यात्रा रैली का दिन उन महान देशभक्त एवं स्वतन्त्रता सेनानियों को याद करने का दिन है, जिनके पुरुषार्थ के कारण आज हम आजाद हैं। राष्ट्र सेवा में सर्वस्व न्योछावर कर देना गुरुकुल की शिक्षा एवं परंपरा का अनिवार्य अंग रहा है।

तिरंगा यात्रा रैली दयानंद द्वार से आरंभ होकर सिंहद्वार होते हुए शंकर आश्रम, रानीपुर मोड पहुंची तथा रानीपुर मोड़ से हाईवे पर सर्विस लेन से होते हुए दयानंद स्टेडियम पहुंचकर समाप्त हुई। यहां कुलपति प्रो. रूप किशोर शास्त्री ने राष्ट्र ध्वज फहराया। तिरंगा रैली यात्रा में विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, शिक्षकेत्तर कर्मियों ने भी प्रतिभाग किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मियों एवं समस्त छात्र-छात्राओं से अपने-अपने घरों पर तिरंगा लगाने का आह्वान किया गया।

रैली के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुनील कुमार सहित कार्यक्रम में मुख्य संयोजक प्रो. अंबुज कुमार शर्मा, प्रो. आर. सी. दुबे, प्रो. सोमदेव शतांशु, प्रो. दिनेशचंद्र शास्त्री, सह संयोजक डॉ. अजय मलिक, डॉ. धर्मेन्द्र बालियान, प्रो. पंकज मदन, प्रो. कर्मजीत भाटिया और श्री जयचंद आदि उपस्थित रहे।

*- जन सम्पर्क अधिकारी*

*प्रतिष्ठा में,*

पृष्ठ 5 का शेष

धर्म से वियुक्त मनुष्य पशु के समान होता है। विद्या जीवन की उन्नति सहित हमारे मोक्ष प्राप्ति का साधन होती है। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्यों में गुणों के बढ़ने से विनम्रता तथा पवित्रता आती है। हमें गुणों का ग्रहण करना है। स्वामी जी ने कहा कि हमें मधुमक्खियों के समान रस का ग्राही बनना है। हमें आदर्श विद्यार्थी तथा तथा नागरिक बनना है। हमें ऋषि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द आदि महापुरुषों के समान बनना है।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आत्मा का उद्देश्य सब दु:खों से छूटकर परमानन्द को प्राप्त करना है। यही मुक्ति है। हम आत्मा हैं। आत्मा कभी मरता नहीं है। आत्मा का कभी जन्म अर्थात् उत्पत्ति नहीं हुई है। हमारा आत्मा अनादि तथा नित्य है। उन्होंने कहा कि जिस पदार्थ का कोई उपादान कारण न हो वह नित्य होता है। उन्होंने आगे कहा कि आत्मा का कोई उपादान कारण नहीं है, इसलिए यह नित्य है।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि कार्य का कारण अवश्य होता है। बिना कारण का को कार्य नहीं होता। आत्मा अल्पज्ञ है। परमात्मा सर्वशक्तिमान है। परमात्मा सर्वव्यापक भी है। उन्होंने सभी ब्रह्मचारियों को कहा कि आपको विद्या की प्राप्ति में पूरी शक्ति लगानी है। उन्होंने बताया कि उत्तम संस्कारों से ही संस्कृति बनती है। आपको गुरुकुल मे अध्ययन करके अपने जीवन को उन्नत बनाना है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वस्तिवाचन के मन्त्रों के उच्चारण सहित यज्ञ हुआ। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने भी यज्ञ के आरम्भ में ब्रह्मचारियों एवं श्रोताओं को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि हम ब्रह्मचारियों को गुरुकुल में प्रवेश करा रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि ब्रह्मचारियों पर माता-पिताओं तथा आचार्यों का ऋण होता है। स्वामीजी ने यज्ञोपवीत के महत्व पर शास्त्रीय दृष्टि से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यज्ञोपवीत विद्या का प्रतीक है तथा आयु को बढ़ाने वाला है।

यज्ञ में उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार की सब विधियां एवं क्रियायें विधि के अनुसार सम्पन्न की गईं। सूर्यदर्शन, भिक्षा, दण्ड धारण सहित मेखला बन्धन की क्रियायें भी सम्पन्न हुई।

संस्कार करते हुए उस मन्त्र का पाठ भी किया गया है जिसका भाव है कि आचार्य तथा ब्रह्मचारी का चित्त व मन सदा समान हों। सभी ब्रह्मचारियों ने इस मन्त्र का उच्चारण किया। ब्रह्मचारियों द्वारा अग्नि को इकट्ठा करने की क्रिया भी की गई। इसका उद्देश्य बताये हुए आचार्य शिवकुमार वेदि जी ने कहा कि आपको जहां से भी विद्या मिले, उसे एकत्र कर लेना चाहिये।

पितृ उपदेश करते हुए पं. विद्यापति शास्त्री जी ने कहा कि संस्कार यदि कहीं से प्राप्त होते हैं, तो वह गुरुकुल से होते हैं। पितृ उपदेश पूरा होने पर ब्रह्मचारियों ने खड़े होकर व सिर झुका कर कहा कि जैसा आपने हमें उपदेश किया है हम वैसा ही आचरण करेंगे। नमस्ते करके ब्रह्मचारी अपने स्थान पर बैठ गये। इसके बाद सभी ब्रह्मचारियों ने भिक्षा ग्रहण की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह